रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

शिक्षा और संस्कार के माध्यम से सोच में बदलाव से हो सकता है समस्याओं का निराकरण– कुलपति प्रो. मिश्र

रादुविवि में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

जबलपुर 04 मार्च। सांस्कृतिक मूल्यों व सामाजिक संरचना में सामंजस्य स्थापित न होने से संस्कृति, सामाजिक अलगाव एवं नियमहीनता उत्पन्न होती है। साथ ही अतंरपीढ़ी संघर्ष, परिवार का कमजोर नियंत्रण एवं परिवार की आकांक्षाओं से उत्पन्न मानसिक दवाब, कुंठा, अवसाद एवं तनाव को बढ़ाता है। इसी के चलते घरेलू हिंसा के मामलों में वृद्धि होती है। शिक्षा और संस्कार के माध्यम से बदलाव लाया जा सकता है जरूरत है युगानुकूल सामाजिक संरचना की। ये विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन एवं शोध केन्द्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा प्रायोजित "अपमानजनक संबंध एवं घरेलू हिंसा : रोकथाम और परिणाम" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री रेखा चूड़ासमा, राष्ट्रीय समन्वयक विद्या भारती, गर्ल्स एज्युकेशन गुजरात ने कहा कि महिलाओं के साथ होने वाली हर तरह की हिंसा के पीछे एक ही तरह की दास्तान है, उनका जन्म समाज में हुआ है, इसलिए समाज को ही उनमें सुधार लाने की दिशा में काम करना होगा। इसके लिए व्यक्गित रूप से विचार करना आवश्यक है।

बदलनी होगी समाज की सोच–

राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह ने कहा कि समाज में बदलाव तभी आयेगा जब लोगों व समाज की सोच महिलाओं को लेकर बदलेगी। राष्ट्रीय संगोष्ठी में वर्चुअल माध्यम से जुड़ी विशिष्ट वक्ता उद्यमिता विद्यापीठ जेपी फाउंडेशन, सतना की डॉ. नंदिता पाठक ने कहा कि व्यक्ति के आचार–विचारों को शुद्ध करके परिवार और समाज को विकसित किया जा सकता है। संस्कारों के जरिए समाज में बदलाव लाकर घरेलू हिंसा जैसी समस्याओं का निराकरण संभव है। विशिष्ट वक्ता डॉ. जितेन्द्र अहेरकर मुम्बई ने कहा कि हम भौतिकवाद की ओर जा रहे हैं स जहां सारा विश्व जगत भारत का अनुकरण कर रहा है वही हम पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रहे हैं, आप हमें जागरूक होना होगा, अपनी संस्कृति और अपनी बच्चियों को सुरक्षा कवच प्रदान करना होगा। आयोजन सह संयोजक कला संकायाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने कहा कि महिलाएं परिवार बनाती है, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है। इसका सीधा सीधा अर्थ यही है की महिला का योगदान हर जगह है। महिला की क्षमता को नजरअंदाज करके समाज की कल्पना करना व्यर्थ है। शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के बिना

परिवार, समाज और देश का विकास नहीं हो सकता। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन राष्ट्रीय संगोष्ठी संयोजक डॉ. श्रीमती राजेश्वरी राणा ने किया।

तकनीकी सत्रों का आयोजन–

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन कार्यक्रम के पश्चात तकनीकी सत्रों में विष्यांतर्गत विशिष्ट व्याख्यान हुए; इसमें ऑनलाईन माध्यम से जुड़ीं विशिष्ट वक्ता महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय की डॉ. प्रज्ञा मिश्रा ने कहा कि महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा सचमुच देश की एक बड़ी समस्या है, जिसे तत्काल हल किए जाने की जरूरत है। दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, नागपुर की डॉ. श्रद्धा अनिल कुमार ने कहा कि समाज के विकास के लिए यह बेहद जरुरी है की लड़कियों को शिक्षा में किसी तरह की कमी न आने दे क्योंकि उन्हें ही आने वाले समय में लड़कों के साथ समाज को एक नई दिशा देनी है। ब्रिघम यंग की बात को अगर सच माना जाए तो उस हिसाब से अगर कोई आदमी शिक्षित होगा तो वह सिर्फ अपना विकास कर पायेगा पर वहीं अगर कोई महिला सही शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है। तकनीकी सत्र में वक्ता के रूप में डॉ. जितेन्द्र अहेरकर मुम्बई ने कहा कि महिलाओं के उत्थान में भारत सरकार पीछे नहीं है। बीते कुछ सालों में सरकार द्वारा अनगिनत योजनाएं चलाई गयी है जो महिलाओं को सामाजिक बेड़ियां तोड़ने में मदद कर रही है तथा साथ ही साथ उन्हें आगे बढ़ने में प्रेरित कर रही है। राष्ट्रीय संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में वक्ता के रूप में डॉ. योगिता मंडलोई, मुम्बई ने कहा कि महिलाओं से होने वाली हिंसा से निपटने का समग्र दृष्टिकोण, व्यवहार में बदलाव लाने के गंभीर प्रयासों के बगैर कभी पूरा नहीं हो सकता। राष्ट्रीय संगोष्ठी में आयोजन सचिव डॉ. जया सिंह एवं डॉ. संजीव पांडे का महत्वपूर्ण सहयोग रहा ।

———————————————————————————————————————

रादुविवि में जैविक खेती एवं जल संरक्षण पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ

जबलपुर 04 मार्च। सरकार का ध्यान नदियों के जल को स्वच्छ कराने एवं बचाने पर नहीं है। चुनाव से पहले गंगा को निर्मल बनाने का ढोल पीटने वाले चुप्पी साधे हुए हैं। नदियों का जो पानी किसानों की फसलों की सिंचाई के लिए माना जाता था उस पर उद्योगपति हक जमा कर फैक्टरियों का गंदा एवं जहरीला पानी छोड़ रहे हैं। नदियों का प्रदूषित पानी आसपास के गांवों में बीमारी परोस रहा है। इसलिए लोगों को जागरूक होने की जरूरत है। नदियों को बचाने के लिए समाज को भी आगे आना होगा। ये बातें जल पुरुष के नाम से विख्यात माननीय श्री राजेंद्र सिंह ने शुक्रवार को विश्वविद्यालय के विज्ञान भवन में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये।

क्षेत्रीय जैविक खेती केंद्र जबलपुर एवं कृषि विज्ञान संस्थान रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 'जैविक खेती एवं जल संरक्षण' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने कहा कि भारत की प्राकृतिक विरासत को बचाने के लिए लिए समाज को आगे आना होगा। हमारी विरासत जल, जंगल,

जमीन, मिट्टी, हवा, बहती हुई नदी, तालाब, पोखर, झील हैं। इन सभी विरासतों का अस्तित्व बिगड़ रहा है। सभी को मिलुजुलकर इस संकट का हल खोजना होगा। कार्यशाला में विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. श्रीमती स्नेहल डोंडे, अध्यक्ष एसकेईसीटी ने कहा कि प्रकृति का विनाश होने से मानव जीवन भी समाप्त हो जाएगा। आधुनिक शिक्षा से प्रकृति में विनाश हो रहा है। भारतीय ज्ञान तंत्र व विद्या को जोड़कर, समझकर अपने भारत को स्वावलंबी बनाकर विरासत को बचाना होगा। डॉ. अजय सिंह राजपूत, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय जैविक खेती केन्द्र, जबलपुर ने बताया कि आने वाला समय जैविक खेती का है एवं जैविक खेती और जल संरक्षण से हमारे वातावरण में सुधार होगा और साथ ही मानव रोगमुक्त होगा। इनके द्वारा किसानों को जैविक खेती की विस्तृत जानकारी के साथ पीजीएस इंडिया द्वारा किसानों हेतु निःशुल्क जैविक प्रमाणीकरण के बारे में विस्तार से बताया गया। आयोजन संयोजक प्रो. सुरेंद्र सिंह, निदेशक कृषि विज्ञान संस्थान, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय ने आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए विद्यार्थियों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित किया गया। कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह ने आयोजन की शुभकामनाएं दीं। संचालन श्री संदीप कुमार बख्षी एवं आभार प्रदर्शन आयोजन संयोजक डॉ. अजय सिंह राजपूत, क्षेत्रीय निदेषक क्षेत्रीय जैविक खेती केन्द्र जबलपुर ने किया। इस अवसर पर डॉ. सरिता यादव, श्री नरेन्द्र राजेन्द्र चौधरी, श्रीमती लीना अनिल, श्री राहुल सिंह, श्री रमेश चंद, श्री शिवकुमार पटेल, श्री ललित कुमार नाईक एवं रादुविवि कौशल विभाग के डॉ. अजय मिश्रा, डॉ. मीनल दुबे, इंजी. महावीर त्रिपाठी सहित अन्य मौजूद रहे। आयोजन में सहयोगी संस्थाओं के रूप में संयुक्त संचालक कृषि जबलपुर, सहयोग नर्मदे समिति जबलपुर, जियो लाईफ, एमपीसीएसटी, जल बिरादरी तरूण भारत संघ एवं मंडला आर्गेनिक आदि का महत्वपूर्ण सहयोग रहा ।

———————————————————————————————————————

वैदेही स्वास्थ्य केन्द्र रादुविवि के तत्वावधान से असाध्य रोगों का बिना दवा उपचार एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण शिविर–

जबलपुर 04 मार्च। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के वैदेही स्वास्थ्य केन्द्र में असाध्य रोगों का बिना दवा उपचार एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जा रहा है। शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम में माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने कहा कि बिना दवा के असाध्य रोगों का उपचार संभव है। प्रचार–प्रसार के अभाव में लोगों को इस विधा की जानकारी नहीं होने से लोग इस चिकित्सकीय पद्धति के ज्ञान से देश के लोग अनभिज्ञ हैं।

शिविर की जानकारी देते हुए स्वास्थ्य केन्द्र के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. संजय श्रीवास्तव ने बताया कि एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है, जो 14 मार्च 2022 तक चलेगा। इसके तहत सुबह 9.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक प्रशिक्षण व उपचार का कार्य किया जा रहा है। उद्घाटन कार्यक्रम में डॉ. अमर प्रताप सिंह चन्द्रवंशी, एक्यूप्रेशर शोध प्रशिक्षण एवं

उपचार संस्थान प्रयागराज ने कहा कि एक्यूप्रेशर एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है, जिसकी खोज हमारे ऋषि मुनियों ने मानव को रोग मुक्त रखने के लिए किया था। इसकी सहायता से अपनी ही हथेली में स्थित बिंदुओं को दबाकर मेथी एवं छोटे चुम्बक के सहारे बिना किसी दवा के किसी भी बीमारी का उपचार स्वयं किया जा सकता है। इससे डाइबिटीज, ब्लड प्रेशर, गठिया, मिर्गी, दमा, स्पांडलाइटिस, मोटापा, किडनी एवं हृदय रोग, महिलाओं के रोग, पथरी, लकवा आदि बीमारियों का इलाज संभव है। इस विधि का प्रशिक्षण लेकर आप अपना और अन्य लोगों का भी उपचार कर सकते हैं। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह, प्रो. विवेक मिश्रा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, डॉ. अनुराधा पांडे, डॉ. संजय श्रीवास्तव, डॉ. टिटोनी, डॉ. चांदवानी आदि की उपस्थिति रही।